P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4*(Part-2) December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

सामाजिक अनुसंधान में निरीक्षण प्रविधि का महत्व

हरबीर सिंह डागुर
सहायक आचार्य,
राजनीति विज्ञान विभाग,
महारानी श्री जया राजकीय महाविद्यालय,
भरतपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

निरीक्षण–प्रविधि सामाजिक विज्ञानों से सम्बन्धित अनुसंधान–कार्यों के सन्दर्भ में कोई नवीन प्रविधि नहीं है। सामाजिक विज्ञानों की बात तो और है, प्राकृतिक विज्ञानों में तो इस प्रविधि का सम्भवतः शुरू से ही प्रयोग होता आया है। प्रो गुड एवं हॉट ने उचित ही लिखा है कि ''विज्ञान निरीक्षण से प्रारम्भ होता है, और फिर सत्यापन के लिए अंतिम रूप से निरीक्षण पर ही लौटकर आना पड़ता है।''[1] प्रो0 गुड एवं हॉट का उपरोक्त कथन उचित ही है। वास्तव में कोई भी वैज्ञानिक किसी भी घटना या अवस्था को उस समय तक स्वीकार नहीं करता, जब तक कि वह स्वयं उसका अपनी इन्द्रियों से निरीक्षण न कर लें। सामाजिक विज्ञानों के बारे में भी यही तथ्य सत्य है। कोई भी सामाजिक अनुसंधान–कार्य तब तक अधिक सफलता नहीं प्राप्त कर पाता, जब तक कि उसमें निरीक्षण–प्रविधि का प्रयोग न किया गया हो। इसी निरीक्षण–प्रविधि का, समाज–वैज्ञानिकों द्वारा, अपने ही साथी एवं स्वजातीय मनुष्यों एवं स्त्रियों तथा संस्थाओं के निरीक्षण हेतु प्रयोग किया जाता है। समाजशास्त्र के पिता श्री अगस्त कॉम्ट जब समाजशास्त्र की रूपरेखा बना रहे थे, तब उन्होंने यह अनुभव किया कि यदि समाजशास्त्र को वैज्ञानिक आधारों का विषय बनाना है तो निरीक्षण–प्रविधि द्वारा उसकी विषय–वस्तु का अध्ययन होना चाहिए। उन्होंने प्रत्यक्ष निरीक्षण द्वारा सामाजिक घटनाओं के अध्ययन पर बल दिया। तभी से निरीक्षण–प्रविधि समाजशास्त्र की महत्वपूर्ण अध्ययन–प्रविधि बन गई। सम्भवतः इससे पूर्व भी सामाजिक विज्ञानों में इस प्रविधि का प्रयोग होता आया है। प्रो0 मोजर ने इसीलिए इसको वैज्ञानिक अनुसंधान की 'शास्त्रीय पद्धति' कहा है। इसके पूर्व, कि निरीक्षण–प्रविधि के महत्व, कार्य–प्रणाली आदि के बारे में अध्ययन किया जाए, पहले निरीक्षण–प्रविधि के अर्थ का ज्ञान अधिक उचित रहेगा।

मुख्य शब्द : अनुसंधान, प्रविधि, समाजशास्त्र, अवलोकन, निरीक्षण, नियंत्रित, अनियंत्रित, प्रयोग, सहभागी, असहभागी, सामूहिक, विश्वसनीय, उपयोगिता, अनुसूची, प्राकल्पना, पूर्वज्ञान, निर्वचन, प्रवृत्तियाँ और समुदाय।

प्रस्तावना

निरीक्षण शब्द अंग्रेजी भाषा के शब्द 'Observation' का पर्यायवाची है, जिसका अर्थ होता है 'देखना', 'अवलोकन करना' या 'निरीक्षण करना'। किन्तु सामाजिक अनुसंधान की एक व्यवस्थित पद्धति के रूप में निरीक्षण का एक अपना पृथक् ही अर्थ है। यदि संक्षेप में कहा जाए तो निरीक्षण का अर्थ है 'कार्यकारण अथवा पारस्परिक सम्बन्ध को जानने के लिए स्वाभाविक रूप से घटित होने वाली घटनाओं का सूक्ष्म निरीक्षण'। डा0 प्रो0 वी0 यंग के अनुसार, 'निरीक्षण को नेत्रों द्वारा सामूहिक व्यवहार एवं जटिल सामाजिक संस्थाओं के साथ ही साथ सम्पूर्णता की रचना करने वाली पृथक् इकाईयों के अध्ययन की विचारपूर्ण पद्धति के रूप में प्रयुक्त किया जा सकता है।[2] प्रो0 सी0 ए0 मोजर ने निरीक्षण के बारें में कहा है ''ठोस अर्थ में निरीक्षण में कानों तथा वाणी की अपेक्षा आँखों के प्रयोग की स्वतन्त्रता है।''[3] ऑक्सफोर्ड कन्साइज शब्दकोष में निरीक्षण की परिभाषा इस प्रकार दी गई है, ''घटनाएँ कार्यकरण अथवा पारस्परिक सम्बन्धों के सम्बन्ध में, जिस रूप में वे उपस्थित होती हैं, का यथार्थ निरीक्षण एवं वर्णन है।''

निरीक्षण के प्रकार और उसका महत्व

अध्ययन की सुविधा के दृष्टिकोण से निरीक्षण को प्रायः कई भागों में विभाजित किया जा सकता है। प्रमुख रूप से निरीक्षण का निम्नवत् वर्गीकरण किया जा सकता है :–

अनियन्त्रित निरीक्षण

अनियन्त्रित निरीक्षण ऐसे निरीक्षण को कहा जा सकता है, जबकि उन लोगों पर जिनका कि हम निरीक्षण कर रहे हैं, निरीक्षण करते समय किसी प्रकार का नियन्त्रण न रहे। दूसरे शब्दों में, जब प्राकृतिक पर्यावरण एवं अवस्था में किन्हीं क्रियाओं का निरीक्षण किया जाता है, साथ ही क्रियाएँ किसी भी बाह्य शक्तियों द्वारा संचालित एवं प्रभावित नहीं की जाती, तो ऐसे निरीक्षण को अनियन्त्रित निरीक्षण कहा जाएगा।

डा0 पी0 वी0 यंग ने अनियिन्त्रित निरीक्षण का अर्थ बताते हुए कहा है, कि ''अनियन्त्रित निरीक्षणों में हमें वास्तविक जीवन की परिस्थितियों की सूक्ष्म परीक्षा करनी होती है, जिनमें यथार्थता के यन्त्रों के प्रयोग अथवा निरीक्षण की हुई घटना की शुद्वता की जाँच का कोई प्रयत्न नहीं किया जाता।'' डा0 यंग के कथन से स्पष्ट ही है कि अनियन्त्रित निरीक्षण में निरीक्षणकर्ता घटनाओं एवं सामाजिक परिस्थितियों का केवल निरीक्षण ही करता है, और सामाजिक सम्बन्धों के बारे में ज्ञान का संकलन करता है। निरीक्षणकर्ता निरीक्षण की हुई घटना को परखता नहीं है।

वास्तव में सामाजिक अनुसंधान में यह प्रविधि अर्थात् अनियन्त्रित निरीक्षण अत्यधिक प्रयुक्त होती है। प्रो0 गुड एवं हॉट ने तो यहाँ तक कहा है कि, ''मनुष्य के पास सामाजिक सम्बन्धों के बारे में जो कुछ भी ज्ञान है, उसका अधिकांश अनियन्त्रित निरीक्षण के द्वारा ही प्राप्त हुआ है, चाहे वह निरीक्षण सहभागी हो, या असहभागी।'' स्पष्ट ही है कि अनियन्त्रित निरीक्षण सामाजिक घटनाओं के अध्ययन की एक सुदृढ़ प्रविधि है।[4]

नियन्त्रित निरीक्षण

जिस प्रकार सामाजिक विज्ञानों का शनैः–शनैः विकास होता आया है उसी प्रकार सामाजिक अनुसन्धान–प्रविधियों का भी उत्तरोत्तर विकास होता गया है। नियन्त्रित निरीक्षण भी अनियन्त्रित निरीक्षण के विकसित स्वरूप के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। वास्तव में अनियन्त्रित निरीक्षण के अनेक दोषों एवं कमियों के कारण ही इस पद्धति का सूत्रपात हुआ। इस प्रविधि में अनेक साधनों द्वारा निरीक्षण को नियन्त्रित किया जाता है। इस प्रकार के निरीक्षण की एक मुख्य विशेषता यह है कि इसमें निरीक्षणकर्ता पर तो नियन्त्रण होता ही है– और तब निरीक्षण किया जाता है। अनेक साधनों द्वारा सूचनाएँ इकट्ठी होती रहती है– और इस प्रकार से निरीक्षणकर्ता एक मशीन की भाँति उन साधनों द्वारा स्वचालित होता रहता है। इस प्रकार के अनेंकों अध्ययन किए जाते रहे हैं जिनमें कि इस प्रविधि का प्रयोग होता आया है। थाईलैण्ड के सारापी जिले में लोगों के स्वास्थ्य की दशाओं का अध्ययन डी0डी0टी0 पाउडर छिड़कने के बाद फिर किया गया था।

इस पद्धति में नियंत्रण दो प्रकार से कार्य रूप में परिणत किया जाता हैः–

सामाजिक घटना पर नियंत्रण

इस प्रविधि में निरीक्षण करने वाली घटना को नियंत्रित किया जाता है। इसको हम सामाजिक प्रयोग भी कह सकते हैं। जिस प्रकार भौतिक वैज्ञानिक भौतिक दुनिया की परिस्थितियों को प्रयोगशाला की नियन्त्रित अवस्थाओं या दशाओं के अन्तर्गत लाकर अपने अध्ययन विषय का अध्ययन करता है, उसी प्रकार समाजशास्त्री भी सामाजिक घटनाओं को सामाजिक परिस्थितियों के अन्तर्गत ही नियंत्रित करने तथा अध्ययन कार्य को संचालित करने का प्रयत्न करता है, यद्यपि यह कोई आसान कार्य नहीं है। इसके लिए सामाजिक वैज्ञानिक को अत्यन्त सूझ बूझ, कुशलता एवं अनुभव से कार्य लेना पड़ता है। इस प्रविधि के द्वारा किए गए कुछ अध्ययनों में थकान का अध्ययन, समय तथा गति का अध्ययन, उत्पादकता का अध्ययन आदि अर्द्व–सामाजिक विषय विशेष रूप में उल्लेखनीय है। समाजशास्त्रीय क्षेत्र में बालकों के व्यवहारों से सम्बन्धित कई अध्ययनों का उल्लेख किया जा सकता है।[5]

निरीक्षणकर्ता पर नियंत्रण

नियन्त्रित निरीक्षण की दूसरी प्रविधि स्वयं निरीक्षणकर्ता पर निरीक्षण है। इसके अन्तर्गत निरीक्षण के विषय या सामाजिक घटना पर नियत्रंण व संचालित किया जाता है। यह मानी हुई बात है कि यदि निरीक्षणकर्ता सामाजिक घटनाओं को उनके वास्तविक एवं सत्य रूप में देखना चाहता है और यदि वह यह भी चाहता है कि उसके अध्ययन पर किसी भी प्रकार का निजी पक्षपात या और कोई व्यक्तिगत प्रभाव की छाया न पड़े तो उसके लिए यह आवश्यक है कि वह स्वयं अपने लिए कुछ नियंत्रणों को स्वीकार करें। यह नियंत्रण कई साधनों या यन्त्रों के प्रयोग से हो सकता है। जैसे निरीक्षण की विस्तृत योजना पहले से ही बना लेना, अनुसूची व प्रश्नावली का प्रयोग, विस्तृत क्षेत्रीय नोट्स, मानचित्र का प्रयोग एवं अन्य यन्त्र जैसे डायरी, फोटोग्राफ्स, कैमरा, टेपरिकार्डर, सिनेमा–फिल्म आदि का प्रयोग।

अधिकतर विद्वानों ने इस प्रविधि की मुक्त कंठ से सराहना की है। प्रो0 गुड एवं हॉट का मत है कि चूँकि सामाजिक अनुसन्धानकर्ता के लिए अनुसंधान –विषय पर नियंत्रण रख सकना अत्यन्त कठिन होता है, अतः कम से कम उसे अपने ऊपर तो नियंत्रण रखना ही चाहिए।

सहभागी निरीक्षण

सहभागी निरीक्षण शब्द का प्रयोग सबसे पहले श्री लिडमैन ने 1924 में प्रकाशित अपनी ''सोशल डिस्कवरी'' नामक पुस्तक में किया था यद्यपि इससे पूर्व भी इस प्रविधि का प्रयोग होता रहता था। प्रो0 लिडमैन ने अपनी उपरोक्त पुस्तक में सहभागी निरीक्षण के पक्ष में दलील पेश करते हुए लिखा है कि सहभागी निरीक्षण इस सिद्वान्त पर आधारित है कि किसी भी घटना का विश्लेषण तभी शुद्ध हो सकता है, जब वह बाह्य तथा आन्तरिक दृष्टिकोण से मिलकर बना हो। इस प्रकार उस व्यक्ति का दृष्टिकोण, जिसने घटना में भाग लिया तथा जिसकी इच्छाएँ एवं स्वार्थ उसमें किसी न किसी रूप में निहित थे, उस व्यक्ति के दृष्टिकोण से निश्चय ही कहीं अधिक यथार्थ व भिन्न होगा जो सहभागी न होकर केवल ऊपरी द्रष्टा या विवेचनकर्ता के रूप में रहा है।[6]

सहभागी निरीक्षण का अर्थ

जहाँ तक सहभागी निरीक्षण के अर्थ का प्रश्न है यह कहा जा सकता है कि इस प्रकार के निरीक्षण में

निरीक्षणकर्ता उस समूह में, जिसका कि उसे अध्ययन करना है, जाकर बस जाता है, उस समूह की सभी क्रियाओं में, समूह के सदस्य के रूप में भागीदार बनता है और साथ ही साथ निरीक्षण भी करता है। इसीलिए इसे सहभागी निरीक्षण कहा गया है। इस प्रकार के निरीक्षण में जैसा कि प्रो0 जॉन मैज का कथन है कि जब निरीक्षणकर्ता के हदय की धड़कनें समूह के अन्य व्यक्तियों के हदयों की धड़कनों के मिल जाती हैं। और वह बाहर से आया हुआ कोई अनजाना नहीं रह जाता, तो यह जानना चाहिए, कि उसने सहभागी निरीक्षणकर्ता कहलाने का अधिकार प्राप्त कर लिया है। प्रो0 गुड एवं हॉट ने भी इसी तथ्य की पुष्टि करते हुए कहा है, ''इस कार्य–प्रणाली का उस समय प्रयोग किया जाता है जबकि अनुसंधानकर्ता अपने को समूह के सदस्य स्वीकृत हो जाने के योग्य बना लेता है।''

वास्तव में सहभागी निरीक्षण में अनुसंधानकर्ता उस समूह में बसकर अपने को इस प्रकार घुला–मिला लेता है कि कभी–कभी तो उसको अपने अस्तित्व का ध्यान भी नहीं रह जाता, अर्थात् वह पूर्ण रूप से समूह का सदस्य बन जाता है। फिर भी निरीक्षणकर्ता को सदैव यह ध्यान रखना पड़ता है कि वह एक अनुसन्धानकर्ता है जो कि इस समूह में अस्थायी तौर पर रहने आया है, और इसीलिए उसको समूह के रीतिरिवाज एवं कार्यकलापों में भाग लेते समय सदैव ही सत्य खोजने के लिए सजग रहना होता है। श्री सिन पाओ यांग ने भी इसी तथ्य को दोहराया है।[7]

असहभागी निरीक्षण

असहभागी निरीक्षण भी अनियन्त्रित निरीक्षण का एक प्रमुख स्वरूप है। इस प्रकार के निरीक्षण में, अनुसंधानकर्ता समूह या समूदाय का, जिसका कि उसे अध्ययन करना है, निरीक्षण एक तटस्थ द्रष्टा की भाँति वैज्ञानिक भावना से करता है। इस प्रकार के निरीक्षण में निरीक्षणकर्ता समुदाय या समूह का न तो अस्थायी सदस्य ही बनता है और न हीं उसकी क्रियाओं में भागीदार बनता है। दूर से ही जो कुछ भी वह निरीक्षण करता है, उसकी गहराई तक पहुँचने का प्रयास करता है। अनुसंधानकर्ता सामूहिक जीवन में स्वयं प्रवेश करने के बजाय उसके बाह्य पहलुओं का ही निरीक्षण करता है। एक प्रकार से निष्पक्ष एवं स्वतंत्रतापूर्वक अध्ययन इस प्रकार की प्रविधि की विशेषता है।

असहभागी निरीक्षण के लाभ

सहभागी निरीक्षण की भाँति असहभागी निरीक्षण के भी अनेक लाभ हैं जिन्हें कि इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है–

असहभागी निरीक्षण में वैश्यिकता या यथार्थता आने की अधिक सम्भावना रहती है, क्योंकि इस प्रकार के निरीक्षण में निरीक्षणकर्ता चूँकि अपने को समूह के कार्यों में बिलकुल घुलमिला नहीं देता, अतः पक्षपात की भी सम्भावना नहीं रहती।

असहभागी निरीक्षण की द्वितीय उपयोगिता विश्वसनीय सूचनाओं की प्राप्ति की दृष्टि से है। प्रश्न पूंछकर सूचनाओं का संग्रह करने में, सूचनादाता द्वारा सत्य छिपा देने की सम्भावना रहती है। परन्तु इस पद्धति में तो निरीक्षणकर्ता स्वयं ही सब कुछ देख लेता है।

असहभागी निरीक्षण में निरीक्षणकर्ता को अधिक आदर एवं सहयोग भी मिलना सम्भव होता है। इसका मुख्य कारण यह है कि वह अपना परिचय जब समूह के सदस्यों को देता है तो स्वतः ही समूह के सदस्य उसका आदर करने लगते हैं।

सहभागी निरीक्षण की अपेक्षा असहभागी निरीक्षण में कम समय एवं कम धन की अपेक्षाकृत आवश्यकता पड़ती है। इस प्रकार यह प्रविधि भी काफी उपयोगी है।[8]

असहभागी निरीक्षण के दोष एवं सीमाएँ

इसमें सन्देह नहीं कि असहभागी निरीक्षण के कई लाभ हैं, फिर भी इसमें अनेक दोष हैं। सबसे प्रथम दोष यह है कि असहभागी निरीक्षण में निरीक्षणकर्ता कई घटनाओं एवं क्रियाओं का महत्व समझने में असफल होता है क्योंकि वह घटनाओं को अपने दृष्टिकोण से देखता है, न कि भाग लेने वालों की दृष्टि से। इसलिए घटनाओं का वास्तविक महत्व छिप जाता है। दूसरे पूर्णतः विशुद्ध असहभागी निरीक्षण असम्भव भी है। प्रो0 गुड एवं हॉट ने कहा है कि जैसा कि छात्र समझ सकते हैं विशुद्व असहभागी निरीक्षण कठिन है। तृतीय एक अजनबी व्यक्ति के प्रति समुदाय वालों का सन्देहास्पद होना भी स्वाभाविक है। इस कारण समुदाय के सदस्यों के व्यवहारों में कृत्रिमता पनप जाती है।[9]

अर्द्व–सहभागी निरीक्षण

जैसे कि उपरोक्त दोनों प्रकार के निरीक्षणों की सीमाओं से स्पष्ट है कि पूर्ण सहभागी या पूर्ण असहभागी निरीक्षण कभी–कभी सम्भव नहीं हो पाता। इसलिए प्रो0 गुड एवं हॉट ने इन दोनों के मध्यवर्ती मार्ग को अपनाया है जिसको कि अर्द्धसहभागी निरीक्षण की संज्ञा दी है। इस प्रकार के निरीक्षण में अनुसंधानकर्ता अध्ययन किए जाने वाले समुदाय के कुछ साधारण कार्यों में भाग भी लेता है, यद्यपि अधिकाशंतः वह तटस्थ भाव से बिना भाग लिए उसका निरीक्षण करता है। प्रो0 विलियम हाइट का कहना है कि हमारे समाज की जटिलता के कारण पूर्ण एकीकरण का दृष्टिकोण अव्यावहारिक रहता है। एक वर्ग के साथ एकीकरण से उसका सम्बन्ध अन्य वर्गों से समाप्त हो जाता है। इसलिए अर्द्व–तटस्थ नीति ही बनाए रखना अधिक उत्तम होता है। जैसे सामाजिक उत्सवों में भाग लेना, गेंद फेंकना, खेलना, साथ–साथ, खाना–पीना और फिर भी यह स्थिति बनाए रखना कि हमारा मुख्य उद्देश्य अनुसंधान है। वास्तव में इस प्रकार के निरीक्षण में पहले वर्णित किए गए दोनों ही प्रकार के निरीक्षणों के लाभ प्राप्त होने की सम्भावना रहती है।

सामूहिक निरीक्षण

नियंत्रित व अनियंत्रित निरीक्षण–प्रविधियों का एक सुन्दर मिश्रण हमें सामूहिक निरीक्षण नामक प्रविधि में प्राप्त होता है। इस प्रविधि में एक ही समस्या या सामाजिक घटना का निरीक्षण कई अनुसन्धानकर्ताओं द्वारा होता है, जो कि उस सामाजिक घटना के विभिन्न पहलुओं के विशेषज्ञ होते हैं। सर्वश्री सिन पाओयांग के शब्दों में यह नियंत्रित व अनियंत्रित निरीक्षण का सम्मिश्रण होता है। इसमें कई व्यक्ति मिलकर सामग्री एकत्रित करते

हैं और बाद में एक केन्द्रीय व्यक्ति द्वारा उन सबकी देन का संकलन एवं उससे निष्कर्ष निकाला जाता है।

सन् 1944 में जमैका में वहाँ की स्थानीय दशाओं के अध्ययन के लिए इस प्रविधि को प्रयोग में लाया गया था। वहाँ पर प्रत्येक माह सामुदायिक जीवन के किसी एक विशेष पहलू के अध्ययन पर ध्यान डाला जाता था। इसके लिए अनुसन्धानकर्ताओं को जिलों में आँकडे संकलित करने के लिए भेजा जाता था। आँकडे संकलित होने पर केन्द्रीय कार्यालय में भेजे जाते थे, वहाँ स्टाफ की मीटिंग में उन पर विचार होकर फिर से निष्कर्ष निकाले जाते थे।[10]

इस प्रकार इस प्रविधि में एक या कुछ निरीक्षणकर्ताओं पर बोझ न पड़कर अनेक लोग इस प्रविधि में कार्य करते हैं, और इस प्रकार अधिक धन की भी आवश्यकता पड़ती है यद्यपि इसमें लेशमात्र भी सन्देह नहीं कि अनुसन्धान कार्य बहुत उत्तम होता है।

निरीक्षण की विश्वसनीयता एवं प्रामाणिकता

सामाजिक अनुसन्धान की प्रायः सभी पद्धतियों में निरीक्षण–प्रविधि सबसे विश्वसनीय एवं प्रामाणिक मानी जाती है और इसका मुख्य कारण यह है कि इसमें अनुसन्धानकर्ता क्षेत्र में स्वयं जाकर निरीक्षण करता है। मानव को सबसे अधिक अपनी ज्ञानेन्द्रियों पर ही विश्वास है। सबसे अधिक सत्यता उसी वस्तु में या तथ्य में हो सकती है जो कि स्वयं अपनी ऑखों से देखा या कानों से सुना गया हो। परन्तु वास्तव में यदि देखा जाए तो यह प्रतीत होगा कि निरीक्षण ही किसी घटना की सत्यता का अचूक प्रमाण नहीं। निरीक्षण में भी त्रुटि हो सकती है। हमारी ऑखें भी हमें धोखा दे सकती हैं। इतना ही नहीं, हम अन्य अनेक प्रकार से भी गलती कर सकते हैं। यह गलतियॉ क्या–क्या हो सकतीं है–निम्नलिखित हैं।

ज्ञानेन्द्रियों की सीमाएँ

यह तो सर्वविदित ही है कि निरीक्षण–प्रविधि में मानव की ज्ञानेन्द्रिय– विशेषकर नेत्रों को ही अधिकतर काम में लाया जाता है। परन्तु अनेक प्रयोगों द्वारा यह अब सिद्ध हो चुका है कि हमारे नेत्रों की शांति भी अचूक नहीं होती–वे भी गलती कर बैठते हैं। इमारी ज्ञानेन्द्रियॉ अक्सर अनिश्चित एवं पक्षपातपूर्ण ढंग से कार्य करती है। पो0 ब्ले कबर्न का कथन है कि ''मनोवैज्ञानिक प्रयोगों द्वारा यह बात सिद्ध हो चुकी है कि कोई व्यक्ति किसी विशेष अवसर पर क्या देखता है, यह बहुत–कुछ उस समय उसके मन एवं शरीर की दशा, उसकी ताजगी, आराम, बाधाओं से मुक्ति, आत्मविश्वास की मात्रा आदि बातों पर निर्भर है।'' निरीक्षण की विश्वसनीयता में ज्ञानेन्द्रियों की सीमाऍ स्पष्ट ही है।

व्यवहार की कृत्रिमता

निरीक्षण की विश्वसनीयता के लिए यह भी आवश्यक है कि हमने जि व्यवहारों का निरीक्षण किया हो,वे कृत्रिमता लिए हुए न हों, क्योंकि जब कभी भी उस विशेष व्यक्ति या समुदाय को, जिसका कि निरीक्षण करना है, यह मालूम हो जाता है कि उनके व्यवहारों का निरीक्षण किया जा रहा है, वे अपना व्यवहार कृत्रिम बनाने का प्रयत्न करते हैं। और इस रूप में हमारा निरीक्षण भी विश्वसनीय नहीं हो पाता।

निरीक्षण एवं निर्वचन

निरीक्षण की विश्वसनीयता में एक अन्य महत्वपूर्ण कारक निर्वचन है। श्री जॉन मैज का इस सम्बन्ध में कथन है कि कोई भी वस्तु, जो हमारी ज्ञानेन्द्रियों को प्रभावित करती है, कोई–न–कोई अर्थ प्रकट करती है तथा हम उसे पूर्वज्ञान से सम्बन्धित कर लेते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि घटना का निर्वचन अधिकांशतः पूर्वज्ञान के आधार पर, न कि निरीक्षण के आधार पर किया जाता है। जैसे यदि किसी कम्पनी के बन्द फाटक पर कुछ लिखा हुआ हो और वह इतना दूर हो कि धुँधला दिखाई देता हो तो हम यही कहेंगे कि इस पर 'बिना आज्ञा अन्दर आना मना है' लिखा है, चाहे लिखा कुछ और ही हो।

निरीक्षणकर्ता का व्यक्तिगत पक्ष पात

वास्तव में इसमें किचिंत् मात्र भी सन्देह नहीं कि निरीक्षण में निरीक्षणकर्ता का अपना स्वयं का व्यक्तित्व बहुत महत्वपूर्ण पार्ट अदा करता है। अक्सर देखा जाता है कि एक ही समस्या का निरीक्षण अलग–अलग व्यक्ति भिन्न–भिन्न प्रकार से करते हैं। ऐसा करने का कारण उनका अपना पृथक्–पृथक् व्यक्त्वि ही है। यह स्वाभाविक ही है कि किसी भी घटना के निर्वचन में हमारे दृष्टिकोण, हमारे विचार, हमारी संस्कृति, अनुभव एवं ज्ञान का अवश्य ही हाथ होगा। शायद कहने की आवश्यकता नहीं, ये सभी व्यक्तिगत पक्षपात के कारण हैं जो कि निरीक्षण विश्वसनीयता एवं प्रामाणिकता में सन्देह उत्पन्न करते हैं।[11]

घटना की अपर्याप्तता

घटना की अपर्याप्तता अथवा अपूर्णता भी प्रायः निरीक्षण की विश्वसनीयता एवं प्रामाणिकता में सन्देह उत्पन्न कर देती है। मान लीजिए कि हमारा निरीक्षण सही है, तो भी सही निष्कर्षों के लिए घटना का पर्याप्त प्रतिनिधित्वपूर्ण होना आवश्यक है, क्योंकि हो सकता है कि हमने जिन घटनाओं का निरीक्षण किया हो, वे कुछ विशेष परिस्थितियों में घटी हों एवं कुछ सही सामान्य घटनाऍ हम निरीक्षण न कर पाए हों, हमारा उन पर ध्यान न गया हो या हमने कोई आधी घटना के निरीक्षण के आधार पर ही निष्कर्ष निकाल लिया हो। यह सब बातें वास्तव में निरीक्षण से प्राप्त हुए निष्कर्षों की वैधता को चुनौती देती हैं जो वैज्ञानिक अनुसन्धान में अपेक्षित नहीं है।

निरीक्षण की विश्वसनीयता के लिए कुछ उपाय

अभी हम निरीक्षण की विश्वसनीयता एवं प्रामाणिकता में आने वाली कुछ मुख्य बाधाओं का वर्णन कर चुके हैं। निम्नलिखित विवरण में उन्हीं बाधाओं को दूर करने के लिए कुछ प्रमुख उपायों का वर्णन किया जा रहा है–

निरीक्षण योजना

निरीक्षण को अधिक प्रामाणिक बनाने के लिए अनुसन्धानकर्ता को अपनी इस निरीक्षण–योजना में सारी बातें पहले से ही निश्चित कर लेनी चाहिऍ जैसे उसे किन–किन तथ्यों का निरीक्षण करना है एवं किस प्रकार। साथ ही, घटना को अनेक पहलुओं में विभाजित कर लेना चाहिए और उनका अध्ययन प्रमाणित पद्धतियों द्वारा समान

रूप से किया जाना चाहिए। इस रूप में यदि निरीक्षण सम्पन्न किया जाए तो अवश्य ही निरीक्षण अधिक अच्छा रहेगा।

अनुसूची का प्रयोग

यदि निरीक्षणकर्ता निरीक्षण करते समय अनुसूची जैसे साधनों की सहायता से निरीक्षण सम्पन्न करता है तो अवश्य ही निरीक्षण अधिक विश्वसनीय एवं प्रामाणिक होगा। निरीक्षण–कार्य के लिए अनुसूची, सामान्य अनुसूची से भिन्न होती है। इस अनुसूची में रिक्त तालिकाएँ होती हैं। निरीक्षणकर्ता उनमें सूचना भरता जाता है। इस अनुसूची में केवल इस बात ध्यान रखना पड़ता है कि निरीक्षण की योजना इस प्रकार की हो कि वह सम्बन्धित विषय पर पूर्ण सूचना प्राप्त करने में समर्थ हो। इसीलिए प्राप्त की जाने वाली सूचना का समुचित वर्गीकरण कर लिया जाता है और विभिन्न तालिकाएँ इस प्रकार बनाई जाती हैं कि सूचना दर्ज करने तथा बाद में उसका विवेचन करने में आसानी हो। वास्तव में जहाँ अनेक ;एक से अधिकतर कार्यकर्ता अनुसन्धान–कार्य में लगे हुए हों वहाँ पर निरीक्षण को वैशयिक बनाने के लिए अनुसूची का प्रयोग अत्यावश्यक है।

प्राक्कल्पना का निर्माण

वास्तव में प्राक्कल्पना के निर्माण से भी विधिवत् निरीक्षण में सहायता मिलती है, क्योंकि इससे अनुसन्धान विशिष्ट तथा केन्द्रित हो जाता है। कार्यकर्ता इधर–उधर नहीं भटकता। यदि कभी निश्चित प्राक्कल्पना का निर्माण किसी कारणवश न भी हो सके तो एक निश्चित समस्या एवं निश्चित अध्ययन–क्षेत्र का चुनाव तो अवश्य ही कर लेना चाहिए क्योंकि इससे अध्ययन में निश्चितता आ जाती है।

वैज्ञानिक यन्त्रों का प्रयोग

विभिन्न प्रकार के वैज्ञानिक संयन्त्रों के प्रयोग से भी निरीक्षण अधिक विश्वसनीय एवं प्रामाणिक हो सकता है। फोटो फिल्म, टेपरिकार्डर, सिनेमा आदि अनेक यन्त्र ऐसे हैं जिनका प्रयोग करने से व्यक्तिगत अभिनति आने की सम्भावना नहीं रहती है। साथ ही निरीक्षणकर्ता की गलती भी इससे मालूम हो सकती है। यद्यपि इस प्रविधि में यह कमी है कि यदि लोगों को यह पता चल जाता है कि उनके व्यवहारों एवं कार्यों की फिल्म ली जा रही है, तो वह अपने व्यवहार में कृत्रिमता ले आते हैं, जिससे कि निष्कर्ष गलत भी हो सकते हैं।

समाजमितिक पैमानों का प्रयोग

सामाजिक अनुसन्धान–कार्यों में अब समाजमितिक पैमानों का भी प्रयोग होने लगा है जिससे परिणामों में अधिक कत्यता एवं शुद्धता आने की सम्भावना रहती है। इन पैमानों द्वारा विभिन्न प्रकार के गुणात्मक सामाजिक तथ्यों की ठीक–ठीक माप बना ली गई है जिनसे कि निरीक्षणता में निरीक्षणकर्ता का व्यक्तिगत पक्षपात नहीं आने पाता।

सामूहिक निरीक्षण

सामूहिक निरीक्षण द्वारा भी निरीक्षण के अधिकाधिक विश्वसनीय एवं प्रामाणिक होने की सम्भावना रहती है क्योंकि जैसा कि विस्तार में बताया ही जा चुका है कि इसमें अनेक क्षेत्रों के विशेषज्ञों द्वारा निरीक्षण किया जाता है। अतः अधिक त्रुटियों की सम्भावना नहीं रहती है।

निष्कर्ष

निरीक्षण–प्रविधि के गुणों का वर्णन करना वास्तव में एक अत्यन्त ही कठिन कार्य है क्योंकि वास्तव में सर्वप्रचलित एवं सर्वमान्य विधि होने के कारण आजकल अनुसन्धान–कार्यों में इसकी उपयोगिता अत्यधिक बढ़ गई है। इसमें प्रायः लेशमात्र भी सन्देह नहीं कि निरीक्षण–प्रविधि का सामाजिक अनुसन्धान में अपना एक पृथक महत्व है, डॉ0 यंग का कथन उचित ही है। प्रथम तो कुछ घटनाएँ इस प्रकार की होती हैं कि जिनका निरीक्षण करना प्रायः निषिद्ध होता है। यदि किसी प्रेमी–प्रेमिका के व्यक्तिगत एवं व्यावहारिक जीवन का निरीक्षण करना हो तो शायद कोई भी व्यक्ति इसके लिए तैयार नहीं होगा। द्वितीय कठिनाई इस प्रकार की है कि कोई निश्चित समय एवं स्थान नहीं है। यदि किसी को गृह–कलह के कारणों/दशाओ का अध्ययन करना हो तो यह निश्चित नहीं कि कब पत्नी एवं पति में झगड़ा होगा। हो सकता है जब झगड़ा हो तब निरीक्षणकर्ता उपस्थित न हो और ऐसा होता ही है। डॉ0 यंग के अनुसार अन्तिम कठिनाई और भी जटिल है। आपके अनुसार कुछ घटनाएँ ऐसी होती हैं जिनका कि निरीक्षण ही असम्भव है। ये अमूर्त तथ्य व्यक्ति के विचार, उद्वेग, भावनाएँ, प्रवृतियाँ आदि हो सकते हैं। इनका निरीक्षण वास्तव में सम्भव ही नहीं है। इसी प्रकार भूतकालीन घटनाओं का भी निरीक्षण नहीं किया जा सकता। प्रकार निरीक्षण–प्रविधि की यह सीमा अत्यन्त महत्वपूर्ण है। निरीक्षण–प्रविधि की अनेकों सीमाएँ होते हुए भी इस तथ्य से प्रायः इनकार नहीं किया जा सकता कि निरीक्षण–प्रविधि का सामाजिक अनुसन्धान में एक अपना ही महत्व है। विशेषकर समाजशास्त्रीय अध्ययनों के क्षेत्र में निरीक्षण–प्रविधि से अधिक सरल, विश्वसनीय, निरन्तर उपयोगी एवं सत्यापन सुविधा प्रदान करने वाली और कोई प्रविधि नहीं है। समयानुसार इस प्रतिधि का उत्तरोत्तर विकास होता रहा है और होता रहेगा।

अंत टिप्पणी

1. *William J. Goode and Paul K. Hatt- Methods in Social Research, McGraw-Hill Book Co. Inc., Newyork, 1952, P. 133*
2. *P.V. Young-Scientific Social Surveys and Research, Asia Publishing House, London, 1954, P.199*
3. *C.A. Moser- Survey Methods in Social Investigation, London 1961, P. 168*
4. *William J. Goode and Paul K. Hatt- Methods in Social Research, McGraw-Hill Book Co. Inc., Newyork, 1952, p. 126*
5. *P.V. Young- Scientific Social Surveys and Research, Asia Publishing House, London, 1954, P.257*
6. *Jessie Bernards-Fields and Methods of Sociology, p. 173*
7. *Hsin Pao Yang- Fact Finding with Rural People, p. 30*
8. *M.N. Basu- Field Methods in Anthropology and other Social Sciences, 1961, Book Land Private Ltd. Calcutta, PP. 20-21.*
9. *William J. Goode and Paul K. Hatt- Methods in Social Research, McGraw- Hill Book Co. Inc., Newyork, 1952, p. 134.*
10. *Hsin Pao Yang- Fact Finding with Rural People, p. 36*
11. *P.V. Young- Scientific Social Surveys and Research, Asia Publishing House, London, 1954, P.263*